

SRIJANSHODH2026-35

उत्तराखंड की लोक कला ऐपण का कलात्मक अध्ययन

शोध छात्रा- कुमकुम बिष्ट
शोध निर्देशक- डॉ. सचिव गौतम
विभाग- ललित कला, देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, देहरादून

सारांश

ऐपण उत्तराखंड की एक पारंपरिक कला है, जिसका कुमाऊं क्षेत्र में विशेष स्थान है। यह उत्तराखंड की पारंपरिक लोक कला (चित्रकारी का रूप) है। इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व का एक बड़ा क्रम है। यह कुमाऊं की एक लोकप्रिय कला है, इसमें दीवारों, कागज और कपड़ों के टुकड़ों को विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों और देवी-देवताओं तथा प्रकृति के वस्तुओं की आकृतियों के चित्रण से सजाया जाता है। इसे पूजा स्थलों, घरों और मुख्य प्रवेश द्वारों पर और आंगन के सामने बनाया जाता है। ऐपण को विभिन्न नामों से जाना जाता है और यह भारत के कई हिस्सों में बड़े रूपांतरों के साथ लोकप्रिय है (कौशिक, 207: 640)।

उत्तराखंड लोक कला ऐपण कुमाऊं क्षेत्र के अल्मोड़ा की एक प्राचीन और अनुष्ठानिक कला है, जो शुभ अवसरों और धार्मिक अनुष्ठानों में प्रमुख रूप से उपयोग की जाती है। यह कला प्राकृतिक वस्तुओं से बनाई जाती है जैसे चावल के पेस्ट और लाल मिट्टी (गेरू) मुख रूप से लाल और सफेद रंग का ही प्रयोग होता है, परंतु कहीं-कहीं पर अन्य रंगों का प्रयोग भी किया जाता है जिसके लिए फूलों की पंखुड़ियां, पेड़-पौधों की पत्तियां तथा हल्दी आदि का प्रयोग भी होता है, इसमें ज्यादातर ज्यामितीय आकर बनाए जाते हैं और यह कला नकारात्मक ऊर्जा को दूर करके देवी-देवताओं का आह्वान करती है। फर्श और भूमि पर बनने वाली यह कला अब ऑयल पेंट, कागज और कैनवस तक पहुंच चुकी है। इसके संरक्षण और विकास के लिए इस पर अधिक से अधिक कार्य प्रयास की आवश्यकता है (आर्य, 2022: 483-488)।

परिचय

उत्तराखंड भारत का प्रमुख पर्वतीय राज्य अपनी भौगोलिक सुंदरता और धार्मिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध होने के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक परंपराओं और यहां की लोक एवं शिल्प कलाओं के लिए भी विख्यात है। गंगा-यमुना जैसी पवित्र नदियों और बद्री-केदार जैसे प्रमुख हिंदू तीर्थ स्थलों से भरा हुआ यह प्रदेश उत्तराखंड प्राचीन काल से ही सभी को आकर्षित करता आया है। धार्मिक मान्यताओं के साथ-साथ प्राकृतिक सौंदर्यों के लिए भी यह राज्य पूरी दुनिया में अपनी अलग ही पहचान रखता है। पहले यह उत्तर प्रदेश का ही एक हिस्सा था, परंतु नवंबर सन 2000 में उत्तराखंड विश्व का 27वां राज्य बन गया। उत्तराखंड में चमोली, टिहरी, पौड़ी, रुद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, देहरादून, हरिद्वार, नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, उधम सिंह नगर, बागेश्वर तथा चंपावत जिले शामिल हैं। उत्तराखंड बनने से पहले यहां का अपना ही ऐतिहासिक महत्व रहा है। उत्तराखंड से मेल खाती सूचनाएं हमें

हिंदू जैन बौद्ध आदि धार्मिक ग्रंथों से प्राप्त होती है। उत्तराखंड में प्राप्त हुई मुद्राओं से यहां के प्राचीन इतिहास की जानकारी मिलती है (आर्य,202:7) ।

सर्वप्रथम लोक का अर्थ संसार है अतः लोक कलाकार साधारण सरल रूप में संसार या लोगों में प्रचलित कला है। “लोक कला” शब्द का अर्थ सामान्य जीवन की मूल धारा से लिया गया है। जैसे मृत्यु लोक, स्वर्ग लोक, देवलोक आदि। जिसके लिए मनुष्य द्वारा कर्मनिष्ठ संघर्ष किया जाता है। लोक कला की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें दैनिक जीवन में प्रयोग की वस्तुओं को सुंदर तथा आनंदित रूप देकर अनेक कलाकृतियों का निर्माण किया जाता है। “कुमाऊं” शब्द की उत्पत्ति स्कंद पुराण में विष्णु के कूर्म अवतार लेने के संकेत से मिलती है। यह भी माना जाता है कि देवासुर शिव मंथन के समय भगवान विष्णु ने कर्म रूप में चंपावती नदी से पहले पूर्व पर्वत में अपनी पीठ लगाई थी। इसीलिए यह स्थान कुमाँचल के नाम से जाना जाने लगा। परंतु वर्तमान समय में यह कुमाऊं के नाम से प्रसिद्ध है (मेहरा, 2002: 3-54) । उत्तराखंड में ऐपण के नाम से पहचान बनाने वाली लोक कला अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग नाम से पहचानी जाती है जैसे पश्चिम बंगाल में अल्पना महाराष्ट्र में रंगोली बिहार में अरिपन, उत्तर प्रदेश में चौक पूरना, दक्षिण भारत में कोलम आदि.. इन सभी कलाओं में प्रयुक्त सामग्री डिजाइन और तकनीक में प्रायः भिन्नता हो सकती है पांतु सभी का उद्देश्य एवं महत्व सकारात्मक ऊर्जा, सौंदर्य एवं देवी देवताओं का आह्वान करना ही है (रावत,2003:25-30) ।

“ऐपण” प्राचीन काल से ही विद्यमान रही है, ऐसा माना जाता है कि यह कला चंद वंश के शासनकाल के दौरान प्रचलन में आई। ऐसा माना जाता है कि ऐपण कला का व्यवस्थित विकास मध्यकालीन चंद वंश, (0वीं-18वीं वीं शताब्दी) के शासनकाल में हुआ, ऐतिहासिक रूप से अल्मोड़ा सातवीं शताब्दी के कट्यूर वंश, चंद वंश, गोरख और वर्तनी शासन के आधिपत्य में रहा है। जब अल्मोड़ा राजधानी बना, वहाँ के शाह परिवारों की महिलाओं ने यह कला किसी खास अवसर पर अपने घरों को सजाने के लिए शुरू की। जो की धीरे-धीरे प्रचलन में आ गई। उनके अनुसार ऐसा माना जाता था कि इस कला में बुराई को दूर भगाने की शक्ति है। यह कला महिलाओं द्वारा अपने घरों को खास अवसर पर सजाने के लिए उपयोग में आई, जो की धीरे-धीरे अब उत्तराखंड की पौराणिक एवं परंपरागत कला का हिस्सा बन गई और अब धीरे-धीरे इसने बाजारीकरण का भी रूप ले लिया है। अल्मोड़ा, जो कि पहले कट्यूरियों और बाद में चंद वंश, गोरखा तथा अंग्रेजों के अधीन रहा, वहाँ की महिलाओं ने ऐपण को घर की चौकी, दरवाज़े, पूजा स्थल और अनुष्ठानों के दौरान विशेष रूप से प्रयोग करना शुरू किया। ऐपण के डिज़ाइन-जैसे स्वस्तिक, नवदुर्गा चौकी, पदचिन्ह... आदि धार्मिक प्रतीकों से युक्त होते हैं, जो दर्शाते हैं कि यह कला केवल सुंदर और सजावटी नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक संरचना से गहराई से जुड़ी है। ऐपण के माध्यम से यह विश्वास किया जाता है कि सुख-समृद्धि और देवी-देवताओं का वास घर में बना रहता है (हांडा,2006:52-57) ।

सामग्री एवं विधियाँ (Materials and techniques)

ऐपण “अल्पना या रंगोली” को बनाने के लिए पारंपरिक रूप से प्राकृतिक चीजों का ही प्रयोग किया जाता है। विशेष रूप से घरों में आसानी से उपलब्ध सामग्री द्वारा ही इसे बनाया जाता है। ऐपण को बनाने के लिए मुख्य रूप से लाल मिट्टी (गेरू) तथा चावल को भिगोकर पीसे गए तैयार पेस्ट जिसे कुमाऊं की आम भाषा में विश्वार कहा जाता है, का उपयोग होता है। इसमें प्राकृतिक रंगों जैसे की गेरू से लाल रंग, चावल के विश्वार से सफेद

रंग,हल्दी से पीला रंग तथा पेड़-पौधों की पत्तियों से हरा रंग उपयोग में लाया जाताथा। कुमाऊं क्षेत्र की महिलाएं अपने घर, मंदिर, दीवारों, रों मुख्य द्वार की वेहरियों आदि को किसी खास अवसर पर जैसे की धार्मिक अनुष्ठान, त्यौहार, पूजा-पाठ, शादी समारोह आदि में सजाने के लिए इसका प्रयोग करती थी जिसमें वह लाल गेरू को देहरी, फर्श, मंदिर तथा दीवारों पर लेप कर उसके ऊपर हाथों की उंगलियों से चावल के विस्वार की बूंदों को फैला कर उस पर विभिन्न प्रकार की आकृतियों का अंकन, ज्यामितीय पैटर्न से डिजाइन तैयार करती थी। इसके साथ ही देवी-देवताओं के आसन और पीठ भी ऐपण से अलंकृत किए जाते हैं। ऐपण उत्तराखंड की पौराणिक कला है। इस कला के माध्यम से सकारात्मक शक्तियों और देवी-देवताओं का आह्वान किया जाता है। कुमाऊं क्षेत्र में शुभ कार्यों,विवाह-समारोह,पूजा-पाठ ... इत्यादि में विभिन्न प्रकार के ऐपण बनाए जाते हैं। यह एक महत्वपूर्ण कला है, जो आध्यात्मिक एवं धार्मिक कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है(डॉ. पांडे,2024:4-5)। यह मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा बनाए जाने वाली कला है जिसमें महिलाएं सबसे पहले भूमि या दीवार को अच्छी तरह से साफ करके फिर उस पर लाल मिट्टी गेरू के गोल से लिप कर पतली परत तैयार करती हैं। जब यह परत सूख जाती है तब चावल को भिगोकर पीसा गया पेस्ट (विश्वार) से

अपनी उंगलियों की सहायता से विभिन्न प्रकार के ज्यामितीय पैटर्न और डिजाइन तैयार करती हैं। इन आकृतियों को बनाने का कोई विशेष उपकरण नहीं होता है यह पूर्ण रूप से हाथों से बनाई जाती है। परंतु वर्तमान समय में समय के अभाव और बाजार में उपलब्ध संसाधनों के कारण अब इसमें रासायनिक रंगों और ब्रशों का उपयोग भी किया जाने लगा है (रावत,2003 :25-30)। कुमाऊं की चित्रकला वर्ष भर में पढ़ने वाले धार्मिक पत्रों, त्रों अनेक संस्कारों, रों पूजा-पाठ, धार्मिक अनुा नों, विवाह-समारोह में बनाए जाते हैं। कुमाऊं की लोक चित्रकला ऐपण को निम्न भागों में विभक्त किया गया है।

1. अल्पना - कुमाऊं की ऐपण कला को “अल्पना” भी कहा जाता है। यह शब्द संस्कृत भाषा के आलेपन से लिया गया है जिसका अर्थ है लीपना। यह लोक चित्रकला भारत में अलग-अलग रूपों में दिखाई देती है। कुमाऊं में शिवरात्रि, महालक्ष्मी-पूजा, दुर्गा-पूजा, दीपावली, मकर-संक्रांति, जनेऊ, नामकरण-संस्कार, विवाह-संस्कार... इत्यादि शुभ अवसरों पर विभिन्न प्रकार के ऐपण बनाने की परंपरा है। अल्पना में बिंदु, रेखा, त्रिभुज, वर्ग, वृत्त, स्वास्तिक, ज्यामितीय कमल, मछली.. इत्यादि चित्रों का निर्माण किया जाता है। लाल चटक गेरू के रंग में चावलों का सफेद रंग चित्रों को विशिष्टता प्रदान करता है।

2. बारबूंद - बारबूंद का तात्पर्य बिंदुओं और रेखाओं से है। इनमें बिंदुओं और रेखाओं की सहायता से एक सुनिश्चित आकृति तैयार की जाती है। यह आकृति फूल, बेल, पत्ती...आदि किसी की भी हो सकती है। आकृति बन जाने के बाद इस पर रंग चढ़ाए जाते हैं। यह बार बूंद के अंग हैं। बिंदुओं और रेखाओं को आड़ी तिरछी रेखाओं के साथ जोड़कर अलग-अलग डिजाइन तैयार किए जाते हैं। अलग-अलग बिंदुओं को जोड़कर अलग-अलग भद्राएं बनाई जाती हैं। बारबूंद के कई प्रकार होते हैं, जो अलग-अलग नाम से जाने जाते हैं। जैसे कि-गोरा तिलक बार, सुरजीबार,खोडसवार, मोष्टीबार, स्वास्तिकबार, सांगलियाबार, नींबूनी बूबार मच्छीबार.... आदि, इन बिंदुओं को मिलाकर फिर इन खानों में सावधानी से रंग भरे जाते हैं। प्रत्येक डिजाइन का आकार बिंदुओं से ही प्रारंभ होता है। हाथ से बनाए गए इन बिंदुओं की दूरी व खानों की लंबाई चौड़ाई किसी पैमाने के नाप से कम नहीं होती।

3. पट्टा - पट्टा से तात्पर्य है लकड़ी के पट्टे या किसी मोटे कागज पर बनाए जाने वाले चित्र। कागज के अलावा यह दीवार पर भी बनाए जाते हैं। कुमाऊं में इसे मुख्य रूप से जन्माष्टमी, दशहरा, दीपावली, दुर्गा पूजा गोवर्धन पूजा, लक्ष्मी पूजा. .. आदि के अवसर पर पढ़े चित्रित किए जाते हैं। भादों के महीने में लकड़ी के पट्टा पर गणेश व रिद्धि-सिद्धि की रचना की जाती है और तिल का विशेष महत्व होने से तिल की पौध भी बनाई जाती है। दीपावली के

शुभ अवसर पर महालक्ष्मी जी का पट्टा विशेष रूप से बनाया जाता है। पट्टे में महालक्ष्मी कमल पुष्प पर विराजमान चित्रित की जाती हैं, इसे लक्ष्मी का पट्टा कहते हैं। पट्टे में गोवर्धन पूजा के दिन कृष्ण को गोवर्धन पर्वत पर धारण किए, चित्रित किया जाता है यह चित्र गेरू से लिपि दीवार और विश्वार से तथा अन्य प्राकृतिक रंगों से भी बनाया जाता है। इस चित्र में माता यशोदा, ग्वाल, गोपी गाय माता और बछड़े आदि भी चित्रित किए जाते हैं। दशहरे के शुभ अवसर पर भी मां दुर्गा की पूजा के लिए देवी का पट्टा बनाया जाता है। इस पट्टे पर राम, लखन, सीता, अंधेरी और उजाली देवियां, लक्ष्मी विष्णु, ब्रह्मा सहित भोलेनाथ, गणपति तथा लोक देवी-देवता....इत्यादि भी चित्रित किए जाते हैं।

4. प्रकीर्ण - शिल्प चित्रण के अंतर्गत आने वाले चित्र अल्पना से कुछ अलग होते हैं। विभिन्न प्रकार के यंत्र और वेदीया, द्वारपत्र रंग वाली आदि मुख्य हैं। यंत्र में अनेक यंत्र जैसे नवदुर्गा यंत्र, चामुंडा यंत्र, दुर्गा उपासना के लिए श्री यंत्र, दुष्ट आत्माओं को भागने के लिए शिव पूजा... आदि यंत्र निर्मित किए जाते हैं। गंगा दशहरा के त्योहार पर एक बड़े वृत्त के भीतर बहुदल कमल यंत्र सहित चित्रित करके द्वार के ऊपर चिपकाया जाता है। जिसे द्वारपत्र कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि इसे चिपकाने से वज्र, अग्नि, आदि से रक्षा होती है। रंग वाली में महिलाएं चौकिया व पट्टा के अलावा लहंगे के साथ पहनी जाने वाली ओढ़नी (जिसे पिछौड़ा कहते हैं) पर रंग वाली का कार्य भी बड़ी सावधानी से करती हैं। कपड़े पर की जाने वाली यह कला बड़ी आकर्षित होती है। इस पिछौड़े में सूर्य, चंद्र, शंख, घंटी और स्वास्तिक के मांगलिक चिह्न भी अंकित होते हैं। इस ओढ़नी को महिलाएं सभी शुभ अवसरों पर बनाती है और पहनती हैं।

5... भित्ति चित्र- अलग-अलग प्रकार के चित्रों को दशनि के लिए इसमें सकारात्मक ऊर्जा के लिए नीले तथा पीले रंग का प्रयोग किया जाता है (वर्मा, 2022: 57-60)।

ऐपण के प्रकार (Types of aipan)

कुमाऊं की यह सुंदर कला कई प्रकार के बनाए जाते हैं जिसमें सरस्वती चौकी, आचार्य चौकी, देवी लौकीक शिवार्जन पीठ, नवदुर्गा चौकी, चामुंडा हस्त चौकी, पर्ण, भित्ति चित्र आदि मुख्य हैं।

सरस्वती चौकी-

शिवार्जन पीठ-



sasiaa.com



ipinming.com

जब किसी बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा शुरू होती है, तब सरस्वती चौकी ऐपण का निर्माण किया जाता है। आचार्य चौकी- हिंदू धर्म में आचार्य जी अथवा पंडित जी को गुरु के समान माना जाता है। इसीलिए उनके लिए एक महत्वपूर्ण आकृति ऐपण के रूप में बनाई जाती है। देवी और लौकिक- देवी में माता दुर्गा द्वारा पट्टा और लौकिक में लाइंस बिंदु का प्रयोग किया जाता है जैसे कि स्वास्तिक।

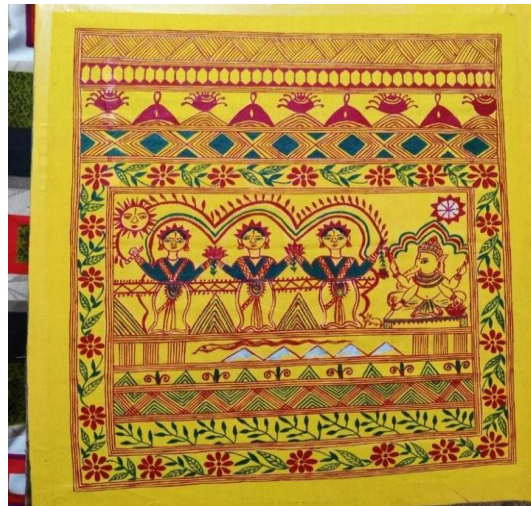
जब भी किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में भगवान शिव जी की पूजा होती है, तब शिवार्जन पीठ का ऐपण बनाया जाता है।

नवदुर्गा चौकी-



Fizdi.com

ज्योति-



sassia.com

यह दुर्गा माता की पूजा के लिए बनाया जाता है, जिसमें बिंदुओं का प्रयोग होता है और वह नवदुर्गाओं का आह्वान करते हैं। 'चामुंडा हस्त चौकी- इसमें शुभ-लाभ, अग्नि, बली... इत्यादि के प्रतीक होते हैं। पर्ण- पर्ण में लकीर तथा बिंदुओं का विशेष महत्व होता है, इसे घरों तथा मंदिरों में बनाने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश माना जाता है।

ज्योति शब्द जीव मातृका से संबंधित है। जीव मातृका की संख्या 7 होती है- कुमारी, घनंदा, नंदा, विमला, मंगला बला एवं पदमा। इन जीव मातृकाओं का पूजन 6 संस्कारों के संपन्न हो जाने के बाद किया जाता है। कुमांरुं में छठी, नामकरण, जनेऊ संस्कार, विवाह संस्कार... इत्यादि के अवसर पर जीवन्ती निर्मित की जाती हैं। छठी के दिन कागज या दीवार पर जीवन्ती बनाई जाती है। इस जीवन्ती में हाथों में फूल और दीपक लिए तीन मातृकाएं बनाई जाती हैं। जिन्हें महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली कहते हैं। उन्हीं के बगल में चूहे पर सवार भगवान गणेश भी बनाए जाते हैं तथा ऊपर बाई और सूर्य और दाहिनी ओर चंद्रमा बनाया जाता है। इसके नीचे 6 मातृकाएं बनाई जाती हैं (चौधरी, 2024)।

आचार्य चौकी- हिंदू धर्म में आचार्य जी अथवा पंडित जी को गुरु के समान माना जाता है। इसीलिए उनके लिए एक महत्वपूर्ण आकृति ऐपण के रूप में बनाई जाती है।

देवी और लौकिक- देवी में माता दुर्गा द्वार पट्टा और लौकिक में लाइंस बिंदु का प्रयोग किया जाता है जैसे कि स्वास्तिक।

जब भी किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में भगवान शिव जी की पूजा होती है, तब शिवार्जन पीठ का ऐपण बनाया जाता है।

चामुंडा हस्त चौकी- इसमें शुभ-लाभ, अग्नि, बली ...इत्यादि के प्रतीक होते हैं।

पर्ण- पर्ण में लकीर तथा बिंदुओं का विशेष महत्व होता है, इसे घरों तथा मंदिरों में बनाने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश माना जाता है।

वर्तमान परिपेक्ष में ऐपण कला का महत्व

सामाजिक महत्व

उत्तरखंड की यह पारंपरिक कलासिर्फ सजावट ही नहीं, हीं बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। यह कला विशेष रूप से मंदिरों और मुख्य द्वार की देहरी पर बनाई जाती है। जो की सुख-समृद्धि और संस्कृति का प्रतीक है। विशेषकर यह कला महिलाओं द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही है, जो कि अपनी संस्कृति और सामाजिक पहचान को मजबूत बनाती है। आधुनिकीकरण और बदलते समयके बावजूद भी यह कला जीवित है। हालांकि सामग्री और विधि में कुछ परिवर्तन अवश्य है, परंतु आज भी यह हमारी संस्कृति एवं सामाजिक पहचान को विशेषता प्रदान करती है। (उप्रेती, 2023: 1-2)

धार्मिक महत्व

कुमाऊं क्षेत्र की यह प्राचीन कला धार्मिक दृष्टिकोण से भी विशेष महत्व रखती है। घरों के मंदिरों प्रवेश द्वार आंगन की पृष्ठभूमि पर सफेद व लाल रंग के माध्यम से बनाए जाने वाली यह कला सौंदर्य और पवित्रता की अनुभूति कराती है इसमें प्रयुक्त प्रतीक जैसे की लक्ष्मी यंत्र, स्वास्तिक, सरस्वती चौकी, चामुंडा हस्त चौकी, शिवार्जनपीठ....इत्यादि विशेष कर धार्मिक अवसरों जैसे की दीपावली, दशहरा, जन्माष्टमी, विवाह संस्कार... आदि के साथ गहराई से संबंध रखते हैं। धार्मिकता की दृष्टि से ऐसा माना जाता है कि अपन घर में सुख समृद्धि, खुशहाली और देवी देवताओं का आह्वान करते हैं। इसके साथ ही नकारात्मक ऊर्जा को हटाकर घर कसकारात्मकता और आध्यात्मिक माहौल में परिवर्तित करते हैं यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है जिससे धार्मिक परंपरा और सांस्कृतिक पहचान निरंतर बनी हुई है।

आर्थिक महत्व

आधुनिकता के इस दौर में ऐपण अपने सांस्कृतिक सौंदर्य के साथ-साथ आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं अब ऐपण को केवल धार्मिक अवसरोपर ही नहीं बनाती, बल्कि इससे होम-डेकोर आइटम्स, पेंटिंग्स, की रिंग्स होल्डर तथा अन्य उत्पाद बनाकर बाजार में सफलतसे पेश कर रही हैं। इसके माध्यम से महिलाओं को स्वरोजगार मिल रहा है, जिससे वे सशक्त और आत्मनिर्भर बन रही हैं महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाएं प्रशिक्षण, प्रचार-प्रसार और व्यावसायिक अवसर प्रदान करके इस पारंपरिक कला को बाजार से जोड़ रहे हैं। ऐपण अपनी सांस्कृतिक प्रतिष्ठा के साथ-साथ ग्रामीण जनजीवन की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण आय के स्रोत के रूप में उभर कर आगे बढ़ रहा है। (पंडेय, 2004: 45-51)

ऐपण कला में महिलाओं की भूमिका

भारत एक अनेक प्रदेशों वाला देश है जहां अलग-अलग बोली भाषाएं बोली जाती हैं और सभी प्रदेशों की अपनी अलग-अलग धर्म और संस्कृति है। सभी प्रदेशों में अपनी अलग-अलग लोक कलाएं हैं और इन्हीं लोककलाओं के माध्यम से हमारी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता झलकती है। इसके अंतर्गत लोकनृत्य, लोकगीत, चित्रकला और अन्य कलाएं आती हैं। लोक कलाएं किसी भी संस्कृति का दर्पण मानी जाती है। लोक कलाओं का जन्म आम लोगों के जरूरी हुआ है। ऐसी कलाओं में संस्कृति की झलक स्पष्ट और सच्ची मिलती है जैसा कि हम सभी जानते हैं की हर एक प्रदेश का अपना अलग रंग और रूप है और उसी रंग में रंगिया की लोक कलाएं हैं जो वहां के लोग संस्कृति को अभिव्यक्त करती हैं किसी भी प्रांत की लोक कलाओं में महिलाओं की विशेष भूमिका देखी जाती है। जैसे बिहार की मधुबनी पश्चिम बंगाल कपड़ों चित्र महाराष्ट्र की वल्ली कला, उत्तराखंड की ऐपण (अल्पना) कला....इत्यादि। मुख्यतः सभी लोक कलाओं में महिलाओं की विशेष भागीदारी देखी जाती है। ऐपण, जो उत्तराखंड की लोक कला है यह महिला सशक्तिकरण का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। इसे सभी शुभ अवसरों धार्मिक अनुष्ठानों शादी, त्योहार पर बनाया जाता है। सरकार के द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए अनेक प्रयास किया जा रहे हैं जिसमें कि अपन कल की भागीदारी भी देखी जाती है इस कला को महिलाएं, दूसरी लड़कियों और वह महिलाओं को सिखाती हैं और स्वयं रोजगार का साधन बन कर महिलाओं के लिए एक मिसाल पेश कर रही है (बंसल, 2025: 221-230)। यह एक ऐसी कला है जो महिलाओं द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती आ रही है। यह मानों तो एक मात्र परंपरा है, जिसमें मां अपनी बेटी और बहू को यह कला सिखाती है। उत्तराखंड की इस पारंपरिक कला के संरक्षक महिला कलाकार हैं, जो न केवल धार्मिक अवसरों पर इसको बनाते हैं, बल्कि इन्होंने इसे सामाजिक पहचान का सूत्र भी बनाया है। वर्तमान समय में भी कई महिलाएं, इस कला से जुड़कर स्वरोजगार प्राप्त करके अपने परिवार की अर्थव्यवस्था में योगदान दे रही हैं। इस प्रकार ऐपण कला में महिलाओं की भूमिका केवल एक रचनात्मकतानहीं, ही बल्कि हमारी धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संरचना का केंद्र है (जोशी, 2022: 123- 124)।

उपसंहार (Conclusion)

“ऐपण” शब्द संस्कृत के “लीपना” शब्द से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है प्लास्टर लगाना। कुमाऊं की इस पारंपरिक कलमें लाल मिट्टी से दीवारों और फरशों पर लेप किया जाता है और फिर इसमें चावल के पेस्ट (विश्वार) से विभिन्न प्रकार के ज्यामितीय आकृतियां बनाई जाती हैं जिसमें देवी देवताओं के चित्र, कमल, स्वास्थ्य, वृत्त, त्रिभुज... जैसे अन्य प्रतीकों का प्रयोग होता है। इन आकृतियों का आरंभ और अंत एक ही बिंदु से होता है। में प्रमुख चौकियां जैसे सरस्वती चौकी, चामुंडा हस्त चौकी, नवदुर्गा चौकी, ज्योति और पत्ता विभिन्न त्योहारों के लिए बनाई जाती है। यह कला धार्मिक मान्यताओं कसाथ-साथ समाज की सांस्कृतिक पहचान भी है विशेष कर महिलाओं के द्वारा यह कला परिवार की खुशहाली, सुख-समृद्धि और सुरक्षा के लिए बनाई जाती है। कुमाऊं क्षेत्र की महिलाओं का यह मानना है कि इस कला के माध्यम से कोई भी बुरी शक्तियां घर के निकट नहीं आती और देवी-देवताओं का आह्वान होता है। देवभूमि उत्तराखंड केवल प्राकृतिक सौंदर्य की धरोहर ही नहीं बल्कि यहां की मिट्टी में बसी लोक कलाएं भी इसकी सांस्कृतिक पहचान को अभिव्यक्त करती हैं। यहां की पारंपरिक लोक चित्रकला अपन केवल सौंदर्य की दृष्टि से ही नहीं बल्कि यहां के सांस्कृतिक सामाजिक धार्मिक एवं आर्थिक रूप से भी विशेष महत्वपूर्ण है। ऐपण के द्वारा न सिर्फ आकृतियों और रंगों को समझा जा सकता है। बल्कि उन भावनाओं, विश्वासों और परंपराओं को भी अनुभव किया जा सकता है, जो कि इस कला के पीछे सदियों से जीवित हैं। कुमाऊं क्षेत्र की महिलाओं द्वारा यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी संजोई गई है। वर्तमान समय में इस कला को एक नया प्रारूप दिया गया है जो की गेरू और चावल के विश्वार, भूमि, मंदिर, दीवार और हाथों की उंगलियां से

अब कागज, ऑयल पेंट्स और ब्रश तक पहुंच चुका है। ऐपण को देवी देवताओं का आमंत्रण, घर की सुख-शांति की कामना और नकारात्मक ऊर्जा से रक्षा का प्रतीक माना गया है। किसी भी कला को जब उसके मूल भाव और रीति-रिवाज के संदर्भ में रखकर देखा जाए तब वह प्रेरणादायक साक्ष्य बन जाती है (तिवारी, 2024: 70-82)।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

- कौशिक, अ. (2017). ऐपण: क्रिएटिव आर्ट ऑफ़ कुमाऊँ. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ होम साइंस*, 3(3), 640–642.
- आर्य, स. (2022). कुमाऊँ की लोककला में प्रयुक्त सामग्री: एक अध्ययन. *जर्नल ऑफ़ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स*, 483–488.
- आर्य, ल. (2021). उत्तराखंड के वैष्णव संप्रदाय में दृश्य कला का विश्लेषणात्मक अध्ययन: 7वीं शताब्दी से 14वीं शताब्दी तक (अप्रकाशित शोध प्रबंध). अध्याय 1.
- मेहरा, ग. (2002). कुमाऊँ की जनजाति की लोक कला एवं संस्कृति का अध्ययन (अप्रकाशित शोध प्रबंध). अध्याय 1, पृ. 3–154.
- हांडा, ओ. सी. (2006). पश्चिमी हिमालयी लोक कला. पेंटागन प्रेस.
- पांडे, र. (2024, दिसंबर). ऐपण कला: उत्तराखंड की परंपरागत और आध्यात्मिक लोक कला. *चेतना पथ*, 125–130.
- रावत, एस. सी. (2003). उत्तराखंड की लोक कला और संस्कृति. इन्डस पब्लिशिंग.
- वर्मा, स. (2022). कुमाऊँ की संस्कृति: लोक कला के विविध आयाम. बीएफसी पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड.
- चौधरी, ज. (2024, 26 फ़रवरी). ऐपण: अ दू जैम ऑफ़ कुमाऊँ ट्रेडिशनल आर्ट. *धारा मैगज़ीन*.
- बंसल, न. (2025). महिलाओं के सशक्तिकरण में लोक कलाओं की भूमिका: कुल्लू जिले के लोक नृत्य, लोक गायन और लोक नाटक के विशेष संदर्भ में (अप्रकाशित शोध अध्याय), 221–230.
- उप्रेती, आ. (2023). कुमाऊँ की पारम्परिक कला रूप विधान: ऐपण व संस्कार गीत. हंस प्रकाशन.
- पांडे, भा. (2004). हमारी सांस्कृतिक विरासत: ऐपण (द्वितीय संस्करण). समय साक्षी प्रकाशन.
- जोशी, स. (2022). कुमाऊँ की लोकपरंपरा और महिला सृजन: ऐपण कला का अध्ययन. हिमालय पब्लिकेशंस.
- तिवारी, कि. (2024, 16 अप्रैल).